RNI-RAJBIL/2009/32418

Volume : 4, Issue : 3-4, July-December, 2012

Samvahini

Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun Quarterly Newsletter

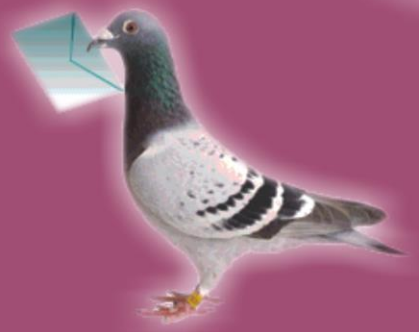

www.jvbi.ac.in

जैन विश्वभारती संस्थान की ओर से परमेश्वर शर्मा, कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित तथा गिरधर ऑफसेट प्रिण्टर्स, लाडनूँ में मुद्रित एवं जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ (राजस्थान) में प्रकाशित। सम्पादक–नेपाल चन्द गंग

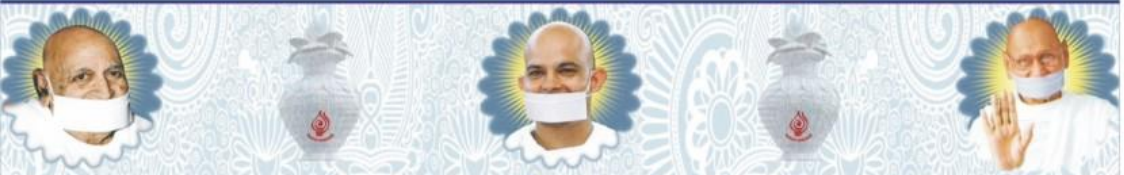

प्रेरणा

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) जैन समाज की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह संस्थान साधुओं तथा साध्वियों के लिए ही नहीं आम जनता के लिए भी एक अच्छा अवसर प्रदान करता है कि वे जैन धर्म एवम् अन्य विषयों का अध्ययन कर औपचारिक डिग्री प्राप्त कर सकते हैं। आचार्य श्री तुलसी तथा आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की दृष्टि सदैव इस संस्थान के विकास की ओर रही थी। इस संस्था के छात्रों और संकायों का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन करना ही ना हो, अपितु इस ज्ञान का क्रियान्वयन ही मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। शुभाशंसा।

आचार्य महाश्रमण

शिक्षा एवं शोध हेतु अनुदान दीजिए

शिक्षा एवं शोध हेतु अनुदान दीजिए

जैन विश्व भारती संस्थान

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत घोषित मान्य विश्वविद्यालय

जैन विश्व भारती संस्थान शिक्षा फण्ड

के तहत न्यूनतम

₹ 5000

का अपना महत्वपूर्ण अनुदान देकर शिक्षा एवम् शोध कार्य को बढ़ावा देने में संस्थान का सहयोग करें।

जैन विश्व भारती संस्थान एज्युकेशन फण्ड एवम् आचार्य तुलसी स्मारिका

- इस शिक्षण संस्थान के विकास हेतु यह चिन्तन किया गया है कि एक स्थाई कोष का निर्माण किया जाए, जिसका नाम होगा - 'जैन विश्वभारती संस्थान एज्युकेशन फण्ड'। इस कोष में प्रत्येक व्यक्ति रु. 5000 या उससे अधिक की राशि अनुदान स्वरूप दे सकता है।
- जैन विश्व भारती एज्युकेशन फण्ड के तहत एक स्मारिका "Acharya Tulsi : A Tribute" का प्रकाशन हो। इस स्मारिका हेतु विज्ञापन सादर आमंत्रित हैं। स्मारिका की विज्ञापन दरें निम्नोक्त हैं :-

Wrapper Back Multicolor Page	Rs. 11,00,000	Wrapper Front Inside Multicolor Page	Rs. 5,00,000
Wrapper Back Inside Multicolor Page	Rs. 5,00,000	Book Inside Multicolor Full Page	Rs. 1,00,000
Book Inside Multicolor Half Page	Rs. 50,000	Book Inside Multicolor Quarter Page	Rs. 25,000

उपरोक्त दोनों योजनाओं को साकार रूप देने के लिए आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपका आत्मीय-भाव संस्थान के प्रति बना रहेगा। अपने सहयोग हेतु आप सम्पर्क कर सकते हैं :-

धर्मचन्द लुंकड़ — मोबाइल : 98401 66699

प्यारेलाल पितलिया — मोबाइल : 98410 36262

संयुक्त संयोजक

जैन विश्वभारती संस्थान एज्युकेशन फण्ड

आप अपना अनुदान निम्न बैंक खातों में भी जमा करवा सकते हैं :- Account Name : "JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE"

State Bank Of India - Account no. - 11261885325 Branch - Ladnun, Rajasthan IFSC code no. - SBIN0007093

Oriental Bank of Commerce - Account no. - 10272111000010 Branch - Ladnun, Rajasthan IFSC code no. - ORBC0101027

State Bank of Bikaner and Jaipur - Account no - 51057700213 Branch - Ladnun, Rajasthan IFSC code no - SBBJ00101112

Samvahini

वर्ष–4, अंक–3-4

जुलाई-दिसम्बर, 2012

जैन विश्वभारती संस्थान

(त्रैमासिक समाचार पत्र)

संरक्षक

समणी चारित्रप्रज्ञा

कुलपति

सम्पादक

नेपाल चन्द गंग

सह–सम्पादक

समणी मीमांसा प्रज्ञा

डिजाईन एण्ड ले-आउट

मोहन सियोल

कम्प्यूटर सहयोग

~~अनोमराम~~

जैन विश्वभारती संस्थान

लाडनूँ – 341306

नागौर, राजस्थान

दूरभाष : (01581) 226110 226230

फैक्स : (01581) 227472

E-mail : jvbiladnun@gmail.com

Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के सपनों का वह साकार रूप है जिसे मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना एवं नये मानव के निर्माण के शैक्षिक प्रयास के रूप में इन महापुरुषों ने संजोया था। अनुशास्ताओं के दूरदर्शी चिन्तन, सामयिक सोच का ही परिणाम है कि प्राच्य विद्या एवं भारतीय संस्कृति के मूल धरोहर को मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम से सारे विश्व में जन-जन तक पहुंचाना संस्थान की स्थापना का मुख्य उद्देश्य रहा है। जैन विद्या, प्राकृत, अहिंसा एवं शान्ति, जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान एवं योग विषयों के साथ स्नातकोत्तर शैक्षिक विभागों की स्थापना शैक्षिक जगत में प्राच्य विद्याओं एवं मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में एक क्रान्तिकारी एवं अनुकरणीय कदम कहा जा सकता है। समय के साथ कालान्तर में समाज कार्य विभाग, अंग्रेजी विभाग, एम.एड., एम.फिल., बी.कॉम. बी.ए., बी.एड., डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट जैसे नियमित पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किये गये है। जैन विश्व भारती संस्थान विश्व का एक ऐसा संस्थान है जहां विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों में मूल्यपरक शिक्षा को समाहित किया गया है। यही कारण है कि अपने उद्देश्य के अनुरूप यह संस्थान शिक्षा के साथ ही व्यक्तित्व विकास एवं सही मायने में मानव निर्माण की प्रयोगशाला के रूप में विख्यात हो रहा है।

हर घर तक शिक्षा पहुंचाने के प्रयास के रूप में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की स्थापना एवं निदेशालय के अन्तर्गत एम.ए., एम.एसी., बी.ए., बी.कॉम., बी.लिब जैसे क्म्प से स्वीकृत पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने के कारण यह संस्थान दूरस्थ शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया है।

जैन विश्वभारती संस्थान प्राच्य विद्या का एक प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्थान है। अनेक शोधार्थी संस्थान से पी.एचडी. एवं डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त कर चुके है। संस्थान में जैन धर्म तथा अन्य दर्शन, अहिंसा आदि अपारम्परिक विषय पर हो रहे शोध कार्यों एवं अध्यापन की महत्ता को आंकते हुए ही प्रत्येक वर्ष विदेशी विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी यहां आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय समर स्कूल में अध्ययनार्थ आते रहते है।

संस्थान का सबसे महत्वपूर्ण उपक्रम आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की स्थापना महिला शिक्षा के दृष्टि से इस सुदूर क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण कदम है। महिला शिक्षा एवं सशक्तिकरण के प्रयास के अन्तर्गत केवल महिलाओं के लिये बी.एड. एवं एम.एड. के पाठ्यक्रम चलाना, आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं एवं कन्याओं के लिये शिक्षण व्यवस्था महिला शिक्षा के लिये ठोस आधार तैयार करने जैसा है। ग्रामीण महिलाओं में जागृति एवं रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण के लिये आचार्य महाप्रज्ञ सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा सिलाई प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है।

विद्यार्थियों के लिये यहां एडवेंचर स्पोर्ट्स के तहत पैरासिलिंग, रैपलिंग, रॉकक्लाईमिंग, काईकिंग, सर्फिंग आदि अनेक प्रशिक्षण करवाये जाते है। विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास के लिये प्रेक्षाध्यान, योग एवं अहिंसा प्रशिक्षण शिविरो के साथ-साथ एन.एस.एस., एन.सी.सी. जैसे उपक्रम भी चलाये जा रहे है। इस संस्थान का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यहां समणीवृंद भी अध्यापन कार्य में अपनी मानद सेवायें दे रही है।

संस्थान में समय-समय पर आयोजित संगोष्ठियों में विद्वानों एवं विशेषज्ञों के सकारात्मक सुझाव एवं उनकी क्रियान्विति हेतु संस्थान की तड़प भविष्य के लिये एक शुभ संकेत है। पिछले कई वर्षों में संस्थान ने विकास की ऊँचाईयों को छुआ है जिनके सपने अनुशास्ताओं ने देखे थे। संस्थान के लिये तैयार की गई विकास की रूप रेखा जहां एक ओर संस्थान को अधिक उपयोगी, आधुनिक एवं समसामयिक बनाने में सक्षम है वहीं शैक्षणिक जगत में इस संस्थान को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का स्वरूप देने की और एक ठोस एवं सार्थक कदम है।

–नेपाल चन्द गंग

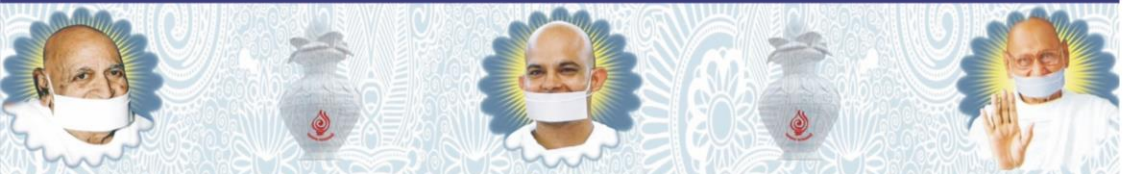

प्रेरणा

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) जैन समाज की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह संस्थान साधुओं तथा साध्वियों के लिए ही नहीं आम जनता के लिए भी एक अच्छा अवसर प्रदान करता है कि वे जैन धर्म एवम् अन्य विषयों का अध्ययन कर औपचारिक डिग्री प्राप्त कर सकते हैं। आचार्य श्री तुलसी तथा आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की दृष्टि सदैव इस संस्थान के विकास की ओर रही थी। इस संस्था के छात्रों और संकायों का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन करना ही ना हो, अपितु इस ज्ञान का क्रियान्वयन ही मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। शुभाशंसा।

आचार्य महाश्रमण

शिक्षा एवं शोध हेतु अनुदान दीजिए

शिक्षा एवं शोध हेतु अनुदान दीजिए

जैन विश्व भारती संस्थान

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत घोषित मान्य विश्वविद्यालय

जैन विश्व भारती संस्थान शिक्षा फण्ड

के तहत न्यूनतम

₹ 5000

का अपना महत्वपूर्ण अनुदान देकर शिक्षा एवम् शोध कार्य को बढ़ावा देने में संस्थान का सहयोग करें।

जैन विश्व भारती संस्थान एज्युकेशन फण्ड एवम् आचार्य तुलसी स्मारिका

- इस शिक्षण संस्थान के विकास हेतु यह चिन्तन किया गया है कि एक स्थाई कोष का निर्माण किया जाए, जिसका नाम होगा - 'जैन विश्वभारती संस्थान एज्युकेशन फण्ड'। इस कोष में प्रत्येक व्यक्ति रु. 5000 या उससे अधिक की राशि अनुदान स्वरूप दे सकता है।
- जैन विश्व भारती एज्युकेशन फण्ड के तहत एक स्मारिका "Acharya Tulsi : A Tribute" का प्रकाशन हो। इस स्मारिका हेतु विज्ञापन सादर आमंत्रित हैं। स्मारिका की विज्ञापन दरें निम्नोक्त हैं :-

Wrapper Back Multicolor Page	Rs. 11,00,000	Wrapper Front Inside Multicolor Page	Rs. 5,00,000
Wrapper Back Inside Multicolor Page	Rs. 5,00,000	Book Inside Multicolor Full Page	Rs. 1,00,000
Book Inside Multicolor Half Page	Rs. 50,000	Book Inside Multicolor Quarter Page	Rs. 25,000

उपरोक्त दोनों योजनाओं को साकार रूप देने के लिए आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपका आत्मीय-भाव संस्थान के प्रति बना रहेगा। अपने सहयोग हेतु आप सम्पर्क कर सकते हैं :-

धर्मचन्द लुंकड़ — मोबाइल : 98401 66699

प्यारेलाल पितलिया — मोबाइल : 98410 36262

संयुक्त संयोजक

जैन विश्वभारती संस्थान एज्युकेशन फण्ड

आप अपना अनुदान निम्न बैंक खातों में भी जमा करवा सकते हैं :- Account Name : "JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE"

State Bank Of India - Account no. - 11261885325 Branch - Ladnun, Rajasthan IFSC code no. - SBIN0007093

Oriental Bank of Commerce - Account no. - 10272111000010 Branch - Ladnun, Rajasthan IFSC code no. - ORBC0101027

State Bank of Bikaner and Jaipur - Account no - 51057700213 Branch - Ladnun, Rajasthan IFSC code no - SBBJ00101112

Samvahini

वर्ष–4, अंक–3-4 (संयुक्तांक)

जुलाई-दिसम्बर, 2012

जैन विश्वभारती संस्थान

(त्रैमासिक समाचार पत्र)

संरक्षक

समणी चारित्रप्रज्ञा

कुलपति

सम्पादक

नेपाल चन्द गंग

सह–सम्पादक

समणी मीमांसा प्रज्ञा

डिजाईन एण्ड ले-आउट

मोहन सियोल

कम्प्यूटर सहयोग

अनोपाराम

कार्यालय

जैन विश्वभारती संस्थान

लाडनूँ – 341306

नागौर, राजस्थान

दूरभाष : (01581) 226110 226230

फैक्स : (01581) 227472

E-mail : jvbiladnun@gmail.com

Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

ऊँचाइयों को छूता संस्थान

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के सपनों का वह साकार रूप है जिसे मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना एवं नये मानव के निर्माण के शैक्षिक प्रयास के रूप में इन महापुरुषों ने संजोया था। अनुशास्ताओं के दूरदर्शी चिन्तन, सामयिक सोच का ही परिणाम है कि प्राच्य विद्या एवं भारतीय संस्कृति के मूल धरोहर को मूल्यपरक शिक्षा के साथ सारे विश्व में जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से इस संस्थान की स्थापना हुई। जैन विद्या, प्राकृत, अहिंसा एवं शान्ति, जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान एवं योग विषयों के साथ स्नातकोत्तर शैक्षिक विभागों की स्थापना शैक्षिक जगत में प्राच्य विद्याओं एवं मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में एक क्रान्तिकारी एवं अनुकरणीय कदम कहा जा सकता है। समय के साथ कालान्तर में समाज कार्य विभाग, अंग्रेजी विभाग, एम.एड., एम.फिल., बी.कॉम. बी.ए., बी.एड., डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट जैसे नियमित पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किये गये है। जैन विश्व भारती संस्थान विश्व का एक ऐसा संस्थान है जहां विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों में मूल्यपरक शिक्षा को समाहित किया गया है। यही कारण है कि अपने उद्देश्य के अनुरूप यह संस्थान शिक्षा के साथ ही व्यक्तित्व विकास एवं सही मायने में मानव निर्माण की प्रयोगशाला के रूप में विख्यात हो रहा है।

हर घर तक शिक्षा पहुंचाने के प्रयास के रूप में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की स्थापना एवं निदेशालय के अन्तर्गत एम.ए., एम.एसी., बी.ए., बी.कॉम., बी.लिब जैसे DEC से स्वीकृत पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने के कारण यह संस्थान दूरस्थ शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया है।

जैन विश्वभारती संस्थान प्राच्य विद्या का एक प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्थान है। अनेक शोधार्थी संस्थान से पी.एचडी. एवं डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त कर चुके है। संस्थान में जैन धर्म तथा अन्य दर्शन, अहिंसा आदि अपारम्परिक विषय पर हो रहे शोध कार्यों एवं अध्यापन की महत्ता को आंकते हुए ही प्रत्येक वर्ष विदेशी विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी यहां आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय समर स्कूल में अध्ययनार्थ आते रहते है।

संस्थान का सबसे महत्वपूर्ण उपक्रम आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की स्थापना महिला शिक्षा के दृष्टि से इस सुदूर क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण कदम है। महिला शिक्षा एवं सशक्तिकरण के प्रयास के अन्तर्गत केवल महिलाओं के लिये बी.एड. एवं एम.एड. के पाठ्यक्रम चलाना, आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं एवं कन्याओं के लिये शिक्षण व्यवस्था महिला शिक्षा के लिये ठोस आधार तैयार करने जैसा है। ग्रामीण महिलाओं में जागृति एवं रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण के लिये आचार्य महाप्रज्ञ सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा सिलाई प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है।

विद्यार्थियों के लिये यहां एडवेंचर स्पोर्ट्स के तहत पैरासिलिंग, रैपलिंग, रॉकक्लाईमिंग, काईकिंग, सर्फिंग आदि अनेक प्रशिक्षण करवाये जाते है। विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास के लिये प्रेक्षाध्यान, योग एवं अहिंसा प्रशिक्षण शिविरों के साथ-साथ एन.एस.एस., एन.सी.सी. जैसे उपक्रम भी चलाये जा रहे है। इस संस्थान का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यहां समणीवृंद भी अध्यापन कार्य में अपनी मानद सेवायें दे रही है।

संस्थान में समय-समय पर आयोजित संगोष्ठियों में विद्वानों एवं विशेषज्ञों के सकारात्मक सुझाव एवं उनकी क्रियान्विति हेतु संस्थान की तड़प भविष्य के लिये एक शुभ संकेत है। पिछले कई वर्षों में संस्थान ने विकास की ऊँचाईयों को छुआ है जिनके सपने अनुशास्ताओं ने देखे थे। संस्थान के लिये तैयार की गई विकास की रूप रेखा जहां एक और संस्थान को अधिक उपयोगी, आधुनिक एवं समसामयिक बनाने में सक्षम है वहीं शैक्षणिक जगत में इस संस्थान को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का स्वरूप देने की ओर एक ठोस एवं सार्थक कदम है।

–नेपाल चन्द गंग

International Summer School

Understanding Jainism Programme

A 21 days International Summer School of **'Understanding Jainism'** was organised for International students from July 23, to August 12, 2012. The understanding Jainism Programme of Jain Vishva Bharati Institute is an intensive course emphasizing on Jain Philosophy, Ethics, Non-violence, Meditation etc. The programme was interdisciplinary in the nature, aiming at to facilitate the condensed and in-depth knowledge in twenty one days schedule time encompassing the total hours needed for any three month certificate course. This course was formulated as per credit system and is equivalent to three credit course, undertaking study hours equal to or more than 35 hours. Under this programme three separate session on Jainism, Science of Living, Preksha Meditation and Yoga and Nonviolence and Peace were organized. In addition of this a special course on Oriental Language was also organised for the participants and they were offered Prakrit, Sanskrit and Hindi Languages.

Under this programme, three separate sessions of Jainism, Science of Living, P.M. and Yoga and Nonviolence and Peace comprising the following topics were organised :

(a) Jainism : Introduction to Jainism, Life of Mahavir, Jain Prayer and Mantra, Jain Literature, Jain Life Style, Life of House Holder, Jain Asceticism, Path of liberation, Nine Tatvas, Six Substances & Jain Cosmology, Jain Art & Architecture, Karma Theory, Theory of Knowledge, Jain symbols & Ceremonies, Concept of Nayavada.

(b) Science of Living Preksha Meditation and Yoga : SOL- an Innovative System of Education, Jain Meditation-Then & Now, Nurturing Factors of Meditation, Stress Management & PM, Anupreksha-Auto Suggestion & Contemplation, Leshya Dhyana-Color Meditation, Charkra Meditation, Healing through Sound Energy, Scientific Research in PM, SOL, Asana & Pranayama, Indian Traditions of Meditations, Value Education & SOL, Anuvrat-A movement of Social Reformation.

(c) Non violence and Peace : Conceptual Development of the Philosophy of Nonviolence, Gandhi & Acharya Mahapragya-The Crusader of NV, Ahimsa Yatra, Economics of NV, Nonviolent Communication, Victory over the Common Danger, Facets of Peace, Eco Spirituality, Conflict Management, Anekant-A Jain Concept of Reconciliation, Training in NV, Vegetarianism.

A study tour was organised covering Jaipur, Ajmer, Pushkar, Jodhpur, Nakoda, Osiaji, Jasol, Bikaner etc. The students witnessed the ancient Indian architecture and the places of religious importance. The visit to local Jain families were organised in order to understand the Jain life style and the socio-cultural aspects of Jain laities. With the objective of making the students familiar with applied Jainism, a visit to Jasol was arranged, where they had an opportunity to have a spiritual interaction with Acharya Mahashrman, the moral stimulant, Anushasta of this Institute. They were blessed by Acharya Shree with soul-provoking tips of non-violent life style. Samani Agam Prajna and Samani Rohini Prajna were the academic convener and Dr. Anil Dhar was co-ordinator of the programme. The programme was organised by M.S. Anekant Shodhpeeth.

Objectives

(i) To understand the concept and ideas of Jainism.
(ii) To develop understanding and attitude of nonviolence.
(iii) To familiarize the participants with the philosophy of creative nonviolence in India.
(iv) To impart training of Preksha Meditation for emotionally balanced life-style.
(v) To establish the importance and relevance of amity for the survival of living being.

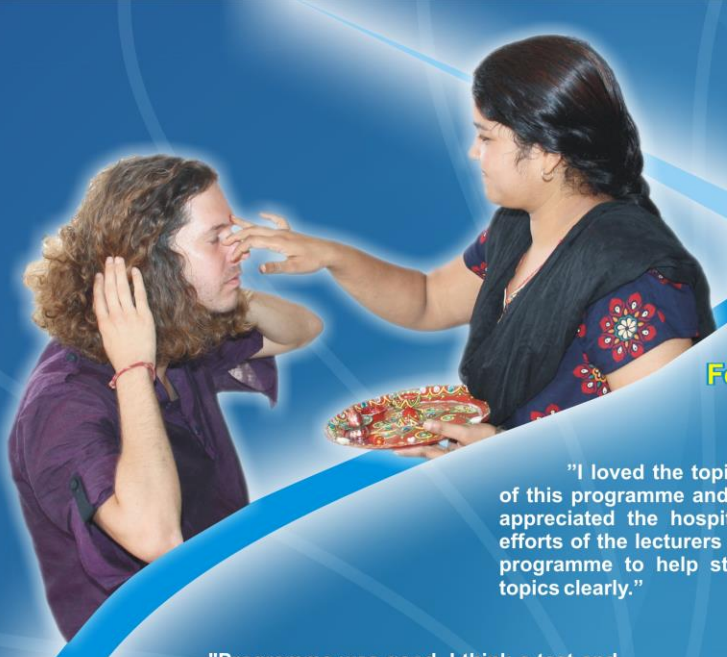

Feed Back from Students

"I loved the topics and professionalism of this programme and its coordinators. I also appreciated the hospitality and the constant efforts of the lecturers and coordinators of the programme to help students understand the topics clearly."
–Nichollette, Texas

"Programme was good. I think a test and paper is too much for a three week programme. I think a longer test would have been more than enough. The staff at the university was very gracious, attentive and helpful. Food and accomodation was very comfortable. Library was nice but too hot."
–David, Miami

"The program provided very interesting information as well as the opportunity to meet with monks and nuns, which is very good since this is a rare opportunity for American students. The field trips were good because it gave us an opportunity to experience Indian culture."
–Veronica, Florida

"Everyone is so friendly and nice. The program in general is an excellent concept. I have had a great spiritual experience. I would gladly return."
–Tiffany, Miami

"Site visits, experimental learning activities and visits to local houses were most beneficial for understanding local culture and understanding how religion is integrated into everyday life."
–Logan, Florida

"The programme was fun, educational and enjoyable."
–Rafael, Miami

संस्कृत-दिवस समारोह

संस्कृत भारतीय संस्कृति का मूल तत्त्व - समणी चारित्रप्रज्ञा

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति का मूल तत्त्व है। संस्कृत और संस्कृति दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। आवश्यकता आज इस बात की है कि हम कैसे हमारी संस्कृति को सुरक्षित रखें? इसके लिए हमें संस्कृत को दैनिक भाषा के रूप में स्थापित करना होगा। ऐसे विचार संस्थान की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा ने संस्कृत-प्राकृत विभाग द्वारा 01 अगस्त को आयोजित संस्कृत-दिवस समारोह के अवसर पर अपने अध्यक्षीय वक्तव्य के रूप में प्रस्तुत किये। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आचार्य दामोदर शास्त्री, वाराणसी से समागत आचार्य जानकी प्रसाद द्विवेदी, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त आचार्य विश्वनाथ मिश्र, डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी ने संस्कृत के महत्त्व को अतीव सरल शब्दों में प्रकट किया।

इस अवसर पर संस्कृत के महत्त्व को प्रतिपादित करने वाली एक लघु नाटिका, गीतिका एवं हास्य कणिका का भी विभागीय छात्राओं, कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं, मुमुक्षु बहिनों द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ छात्राओं के द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् विभागाध्यक्ष आचार्य जगतराम भट्टाचार्य ने सभी आगन्तुक महानुभावों का स्वागत एवं संस्कृत-दिवस के महत्त्व को संस्कृत भाषा में प्रतिपादित किया। कार्यक्रम के अन्त में विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम का संयोजन विभाग की ही सहायक आचार्य डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया।

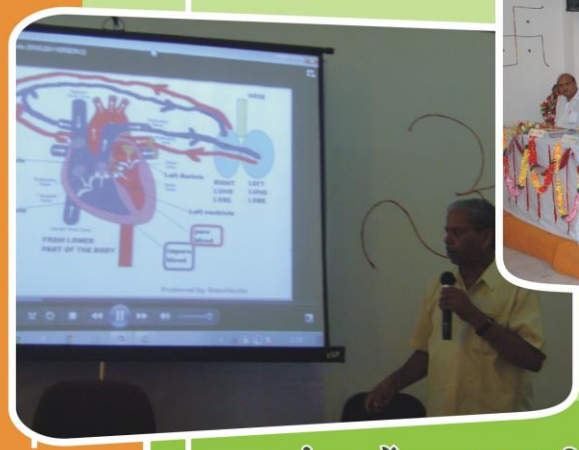

राष्ट्रीय कार्यशाला

वर्तमान में मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता - प्रो. एस.पी. मिश्रा

संस्थान के शिक्षा विभाग तथा जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग विभाग के संयुक्त नेतृत्व में मूल्यपरक शिक्षा पर आधारित सप्तदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समायोजन 10 से 16 सितम्बर तक किया गया। कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि जैन विश्वभारती संस्थान का मूल उद्देश्य मूल्य आधार शिक्षा प्रदान करना है।

जीवन विज्ञान शिक्षा जगत में मूल्यों को जागृत करने का सफलतम उपक्रम है- मूल्य है तो जीवन है। मुख्य अतिथि प्रो. एस.पी. मिश्रा, श्रीधर विश्वविद्यालय-पिलानी ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस विश्वविद्यालय के आदर्श वर्तमान युग को सही दिशा बोध देने वाले है। इसके लिए जैन विश्वभारती संस्थान ने एक सार्थक कदम उठाया है। गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के योग विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. ईश्वर भारद्वाज ने अपने उद्बोधन में कहा कि योग और शिक्षा हमें जीवन जीने की कला सीखाती है।

कार्यशाला के विभिन्न सत्रों को प्रो. आर.पी. कर्म योगी, निदेशक शिक्षा विभाग देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार, प्रो. ए.के. मलिक समन्वयक पी.टी.ई.टी. जोधपुर, प्रो. ए.के. शर्मा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय अजमेर, प्रो. बी.आर. शर्मा केवल्य धाम, लोनावला, पूना, प्रो. रीटा अरोड़ा विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय आदि विद्वानों ने भी संबोधित किया।

राष्ट्रीय कार्यशाला

अहिंसा, शांति एवं गांधी अध्ययन में रोजगार संभावनाओं की तलाश

जैन विश्वभारती संस्थान में गांधी अध्ययन, शांति एवं अहिंसा विभागों के विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ प्रोफेसर इन संभावनाओं की तलाश में जुटे कि गांधी जो सदा प्रासंगिक हैं और रहेंगे उन पर आधारित पाठ्यक्रमों की प्रासंगिकता पर सवाल इसलिए खड़े हो रहे हैं क्योंकि इस विषय में रोजगार संभावनाएं न्यून हैं। देशभर के करीब 15 विश्वविद्यालयों–पंजाब विश्वविद्यालय–चण्डीगढ़, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय–कुरूक्षेत्र, गढ़वाल विश्वविद्यालय, जम्मू विश्वविद्यालय, नागपुर विश्वविद्यालय, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, गुजरात विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय–

वर्धा, जैन विश्वभारती संस्थान आदि–आदि के आचार्यो ने 27–28 जुलाई को अहिंसा एवं शांति विभाग एवं कॅरियर एण्ड कॉउन्सलिंग सेल द्वारा आयोजित अहिंसा, शांति एवं गांधी अध्ययन में रोजगार संभावनाएं विषयक द्वि–दिवसीय कार्यशाला में गहन विचार–विमर्श किया। कार्यशाला के तीन मुख्य सत्र–शैक्षिक क्षेत्र में रोजगार संभावनाएं, गैरसरकारी, अर्द्धसरकारी एवं सरकारी क्षेत्र में संभावनाएं तथा पाठ्यक्रमों को नवाचार आधारित एवं अद्यतन करना थे। कार्यशाला निदेशक प्रो. बच्छराज दूगड़ ने विद्वानों का परिचय दिया। प्रो. जे.एन. शर्मा, प्रो. अनुराग गंगल, प्रो. एस.के. शर्मा, प्रो. के.एस. भारती, प्रो. हिमांशु बोराय, प्रो. विद्या जैन आदि आचार्यों तथा अन्य प्रतिभागियों की सर्वसम्मति से चार सदस्यीय समिति का गठन हुआ जिसमें प्रो. के.एस. भारती, प्रो. विद्या जैन, प्रो. हिमांशु बोराय तथा प्रो. नलिन शास्त्री के द्वारा तैयार की गई अनुशंसाओं में गांधी अध्ययन विषय के विकास पर बल दिया गया। इस समिति के तहत अनेक बहुमूल्य परामर्श लिये गए जिससे यथोचित्त निष्पति आ सके।

कुलपति महोदया ने इस राष्ट्रीय कार्यशाला की सार्थकता को प्रमाणित करते हुए कहा कि इस विद्वत्तापूर्ण चिन्तन, मंथन और विचार–विमर्श से जो निर्णय लिए गए हैं, उनके क्रियान्वयन से निश्चित रूप से अहिंसा, शांति और गांधी अध्ययन विषय का भविष्य उज्ज्वल एवं सुखद बनेगा।

युवा संयम, सादगी एवं श्रम प्रधान जीवन जीयें - प्रो. दूगड़

आज व्यक्ति स्वयं से, समाज से और प्रकृति से अलग होता जा रहा है। वह प्रकृति को अपने लिए भोग्य मानता है और उससे स्वयं को अलग समझता है। ये विचार जैन विश्व भारती संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बच्छराज दूगड़ ने 15 सितम्बर को आयोजित स्कूली छात्राओं के अहिंसा प्रशिक्षण के एक दिवसीय शिविर के उद्घाटन समारोह में अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए। प्रो. दुगड़ ने युवाओं को संयम, सादगी और श्रम प्रदान जीवन शैली अपनाने पर बल दिया। शिविर में लगभग 60 स्कूली विद्यार्थियों ने भाग लिया। डॉ. अनिल धर ने शिविर के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुये अहिंसा प्रशिक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण पर बल दिया। युवा शिविर में योग विशेषज्ञ डॉ. संजीव कुमार गुप्ता एवं डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने शिविरार्थियों को प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया। डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापन तथा डॉ. वंदना कुण्डलिया ने कार्यक्रम संयोजन किया।

DAY OF AMITY CELEBRATED

Dr Samani Satya Pragya and Samani Rohini Pragya delivered lecture among the school children in their assembly on the topic of **Relevance of Amity** day in reference to *jaina kshamapana divasa*.

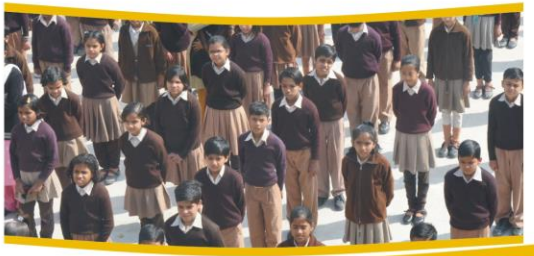

अहिंसा प्रशिक्षण शिविर

समाज कार्य विभाग

पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम

रा.उ.मा. विद्यालय शिमला में संस्थान के समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों द्वारा 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस पर पर्यावरण संरक्षण पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पूर्णाराम विशिष्ट अतिथि थे। इस संदर्भ में स्कूल के बच्चों द्वारा एक विशेष रैली का आयोजन किया गया। रैली की समाप्ति के बाद 50 पौधे लगाकर वृक्षारोपण कार्यक्रम को पर्यावरण संरक्षण के प्रायोगिक रूप में प्रस्तुत किया गया।

आमुखीकरण कार्यक्रम

संस्थान के समाज कार्य विभाग द्वारा विभाग के प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों के लिए दो दिवसीय आमुखीकरण कार्यक्रम का उद्घाटन 28 अगस्त को किया गया। मुख्य अतिथि कुलसचिव परमेश्वर शर्मा की उपस्थिति में समाज कार्यविभाग के तत्कालीन विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने स्वागत करते हुए दो दिवसीय आमुखीकरण कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। सहायक आचार्य डॉ. पुष्पा मिश्रा ने भी छात्र-छात्राओं को संबोधित किया।

कॅरियर काउन्सलिंग समाज कार्य विभाग

कॅरियर कॉउन्सलिंग सेल एवं समाज कार्य विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 12 जुलाई को महाप्रज्ञ सभागार में टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल वर्क मुम्बई के प्रो. मुरली देसाई ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी वही होता है जो अपने जीवन में कुछ कर गुजरने का संकल्प करता है। यद्यपि हर विद्यार्थी की क्षमता समान नहीं होती परन्तु इस काल में समाज कार्य से जो प्रशिक्षण प्राप्त होता है यह प्रशिक्षण भावी जीवन को सुरक्षित बनाता है।

विश्व साक्षरता दिवस

विश्व साक्षरता दिवस पर 8 सितम्बर को जैन विश्वभारती संस्थान के समाज कार्य विभाग ने छपारा में कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलसचिव परमेश्वर शर्मा व अध्यक्षता समाज कार्य विभागाध्यक्ष बिजेन्द्र प्रधान ने की। तेरापंथ महिला मण्डल व अणुव्रत सेवा समिति के सदस्य भी उपस्थित थे।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

ग्राम शिमला के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में बच्चों की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन 20 सितम्बर को किया गया। प्रतियोगिता में कक्षा 7 एवं 8 के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर रैली

8 सितम्बर को आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना केन्द्र शहरियाबास में अंतराष्ट्रीय साक्षरता दिवस रैली में केन्द्र के विद्यार्थियों के द्वारा साक्षरता के नारे लगाते हुए बस्ती के लोगों को शिक्षा के प्रति जागरुकता का संदेश पहुंचाया।

संगीत प्रतियोगिता

8 अगस्त को आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना केन्द्र शहरियाबास एवं निम्बी जोधा तथा आचार्य महाप्रज्ञ महिला सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र दुजार एवं बड़ी ईदगाह सुनारी रोड़ में संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस संगीत प्रतियोगिता का विषय 'देश भक्ति एवं राजस्थानी गीत' रखा गया। प्रतियोगिता में कुल 90 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कढ़ाई प्रतियोगिता

22 सितम्बर को आचार्य महाप्रज्ञ सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र दुजार एवं सिलाई केन्द्र बड़ी ईदगाह सुनारी रोड़ में कढ़ाई प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कढ़ाई प्रतियोगिता में कुल 33 प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा प्रतियोगिता में भाग लेने वाली सभी महिला प्रतिभागियों ने कपड़ों पर अपनी पसंद की अलग-अलग कढ़ाई बनाकर अपनी हस्तकला का परिचय दिया।

मेहंदी प्रतियोगिता

3 सितम्बर को आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना केन्द्र शहरियाबास, निम्बी जोधा तथा सिलाई केन्द्र बड़ी ईदगाह सुनारी रोड़ एवं दुजार में मेहन्दी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मेहन्दी प्रतियोगिता में कुल 68 प्रतिभागियों ने अपनी पसंद की मेहन्दी बनाकर कर अपनी हस्तकला का परिचय दिया।

चित्रकला प्रतियोगिता

20 जुलाई को आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना केन्द्र शहरियाबास, निम्बी जोधा तथा आचार्य महाप्रज्ञ महिला सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र दुजार एवं सिलाई केन्द्र बड़ी ईदगाह सुनारी रोड़ में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 85 प्रतिभागियों ने उत्सुकता के साथ भाग लिया।

Department of English & Career Counseling Cell

A Seven Day Workshop on Translation: Theory and Practice

A seven day workshop on Translation: Theory and Practice was organized by the Department of English and the Department of Sanskrit and Prakrit in collaboration with Career and Counselling Cell from Sept. 20 to 26, 2012. The workshop was attended by more than 75 participants. The Inaugural session was presided over by the Honourable Vice Chancellor Samani Charitra Prajna. Dr N.P. Sharma Senior Professor, Translator and Poet from Jaipur delivered the keynote address speaking about **Translation and Trancreation**. On the second day Prof. J R Bhattacharyya, Professor and head Department of Sanskrit and Prakrit conducted the workshop on **Issues in Translating the Jain Philosophical Texts.** He also discussed on transliteration. Dr. Sanjiv Yadav from Central University of Haryana deliberated upon '**Cultural Translation: Problems and Perspectives**' Prof. Hem Singh Chandalia expressed his views on the **Transference of ideas from S L to TL**. Dr. Sanjay Arora from Govt. (PG) College, Dausa was the resource person on 23rd Sept. He conducted the workshop focusing on **The Practical aspects of Translation**. The participants were engaged in various exercises based on the topic. Prof. H.L. Godara, Principal Govt. Girls College Jhunjhunu visited the Institute as Resource Person on Sept. 24. He enumerated the **problems faced while rendering a Rajasthani text into English** quoting from Anna Ram Sudama's stories in Rajasthani. On sixth day Prof. Rekha tiwari Head, Dept. of English spoke about "**Translation and Translating**". With the help of examples and exercises she tried to discuss the various aspects involved in the work of translation. Dr Samani Kusum Prajna and Dr Samani Ramaniya Prajna also discussed various difficulties involved in translation The Valedictory address was delivered by Prof. Rajul Bhargava, Former Chair, Dept. of English, University of Rajasthan. She started from the history of translation to the present scenario of Translation. She emphasized on the fact that the world becoming a Global village, we have to depend greatly on translation. She gave the examples from the Translation of Macbeth and stressed on comprehending the text in its proper cultural perspective.

Department of English & Career Counseling Cell

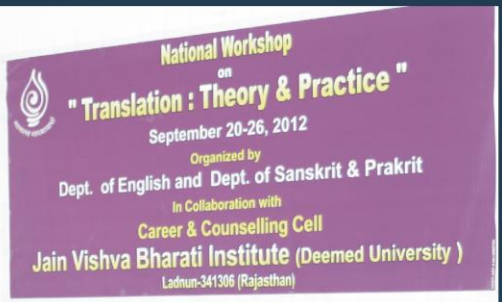

9 अगस्त को राजकीय लोहिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय चुरू के डॉ. एम.एम. शेख ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए विद्यार्थियों को कहा कि हम पहले मानव हैं फिर किसी धर्म के अनुयायी। हम सब भाई-भाई हैं। सर्वधर्म समभाव हमारा परम धर्म है।

12 सितम्बर को सेमीनार हॉल में आयोजित कार्यक्रम में श्री बी. आर. मिर्धा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नागौर के डॉ. प्रेमसिंह बुगासरा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति तीव्र होनी चाहिये। स्मरण शक्ति का विकास कॅरियर के निर्माण में सहायक होता है ।

आचार्य महाप्रज्ञ सभागार में 3 सितम्बर को संस्थान के छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए पंजाब नेशनल बैंक, चण्डीगढ़ के ए.जी.एम. अनिल जैन ने कहा कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का राज है- प्रबन्धन। प्रबन्धन के बिना किसी भी व्यवसाय के उद्देश्य को प्राप्त करना असम्भव है।

कॅरियर काउन्सलिंग सेल एवं अंग्रेजी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 23 सितम्बर को केन्द्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा के अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. हेमचन्द्रसिंह चण्डालिया ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि मानव में मानवीय मूल्यों के विकास को सर्वोपरि बनाने के लिए ऐसी शिक्षा प्रणाली अपनानी चाहिये जो व्यक्ति के प्रामाणिक, नैतिक एवं राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का महनीय कार्य कर सके।

4 सितम्बर को महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर एस.के. अग्रवाल ने सेमीनार हॉल में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यदि अंग्रेजी भाषा का ज्ञान विद्यार्थी जीवन में प्रारम्भिक स्तर पर कर लिया जाता है तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कॅरियर निर्माण सुविधाजनक हो जाता है। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा ने कहा कि बदलते युग में अंग्रेजी ऐसी भाषा है, जो विश्व में कहीं पर भी प्रयोग कर सकते हैं।

प्राचीन शिक्षा पद्धति सभी दर्शनों का समन्वित रूप-प्रो. रामानुज देवनाथन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 28 सितम्बर को एक दिवसीय परिसंवाद ''दर्शन व मनोविज्ञान का शिक्षा में अनुप्रयोग'' विषय पर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्षीय उद्‌बोधन में संस्थान की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा ने कहा कि भारतीय संस्कृति आत्मकेन्द्रित शिक्षा पर आधारित है। अतः शिक्षा का मूल उद्देश्य विवेकचक्षु को जगाना है। मुख्य अतिथि प्रो. रामानुज देवनाथन, जगद्‌गुरु रामानंदाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति ने उद्‌बोधन देते हुए कहा कि हमें भारतीय दर्शन को समझ कर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का निर्धारण करना चाहिये। भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति सभी दर्शनों का समन्वित रूप है। अतः वर्तमान शिक्षा जगत् में दर्शन एवं मनोविज्ञान की सार्थकता से एक नया प्रयोग होगा। परिसंवाद में प्रो. अमिताभ शर्मा, प्रो. अशोक सिढ़ाना ने भी अपने विचार व्यक्त किये। विभागाध्यक्ष डॉ. बी.एल. जैन ने आभार व्यक्त किया।

प्रतिभा परिचय एवं समरसता कार्यक्रम

7 सितम्बर को संस्थान के शिक्षा विभाग में आयोजित प्रतिभा परिचय एवं समरसता कार्यक्रम में अतिथियों का परिचय करवाते हुये विभागाध्यक्ष डॉ. बी. एल. जैन ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर भी प्रकाश डाला। अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा ने कहा कि छात्राध्यापिकाओं को पुस्तकीय ज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान भी दिया जाता है। परिश्रम एवं आत्मबल से जीवन के किसी भी क्षेत्र की कठिनाइयों को जीता जा सकता है। संस्थान के कुलसचिव परमेश्वर शर्मा ने छात्राध्यापिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि छात्राध्यापिकाओं के जीवन के हर क्षेत्र में समस्याएं आ सकती हैं लेकिन उन्हें इन समस्याओं से लड़ने के लिए हमेशा जागरूक रहना होगा। कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दीं।

सामाजिक पर्यावरण की समस्याओं का एक उपचारात्मक उपागम : शिक्षा

जैन विश्वभारती संस्थान के शिक्षा विभाग में 29 सितम्बर को द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी ''सामाजिक पर्यावरण की समस्याओं का एक उपचारात्मक उपागम : शिक्षा'' विषय पर आयोजित की गई। संगोष्ठी की अध्यक्ष संस्थान की कुलपति समणी चारित्र प्रज्ञा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि मनुष्य की सोच का तरीका बदलने से सभी प्रकार की सामाजिक समस्याओं, जीवन शैली, प्रदूषण, रहन-सहन सांस्कृतिक समस्या उत्पन्न होती है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. राधेश्याम शर्मा कुलपति, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जब हम प्रकृति के विपरीत कार्य करते हैं तो प्रकृति हमें दंडित करती है। अतः वर्तमान समाज की शिक्षा व्यवस्था को प्राकृतिक दोहन रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. मथुरेश्वर पारीक निवर्तमान अधिष्ठाता शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय ने अपने वक्तव्य में कहा कि पर्यावरण संरक्षित करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन रोकना होगा।

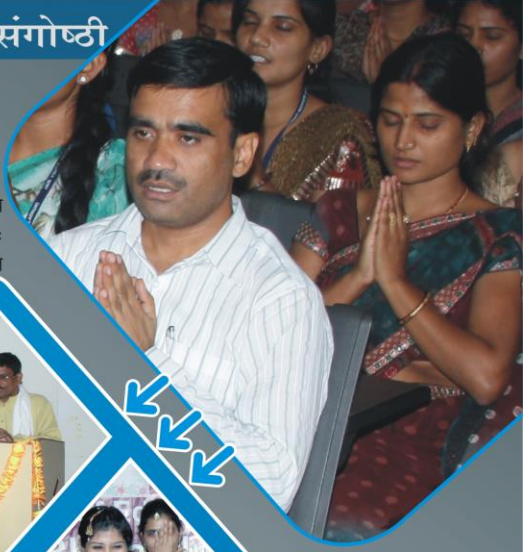

30 सितम्बर को समापन समारोह में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का निष्कर्ष सहायक प्रोफेसर डॉ. अमिता जैन ने प्रस्तुत किया। समापन समारोह के अध्यक्षत प्रो. एस.बी.सिंह सागर विश्वविद्यालय ने की। मुख्य अतिथि प्रो. गोपीनाथ शर्मा, संजय टी.टी. कॉलेज, जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. के. साम्ब शिव मूर्ति, डीन, जगद्‌गुरू रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर थे।

Vice-Chancellor's Incessant Steps

Our Pride : Samani Charitra Prajna

An Historical Achievement

Samani Charitra Prajna, Vice-Chancellor of JVBI, disciple of H.H. Acharya Mahashramana has been awarded with the honour of Colonel by the Government of India for her great contribution to human society.

Value-education and Corporate Governance

On 16th September, 2012, 2nd Acharya Mahapragya Memorial Lecture was organized by Terapanthi Sabha, at PHD Chamber, New Delhi. Welcome address was given by Sumanjyoti Khaitana, Sr. Vice President, PHD Chamber. He said that the root cause of todays social problems are in the past. Samani Charitra Prajna, VC, JVBI, in her opening remarks said, this problem is not of a state or a country but it is a global problem. We have to understand all the words value, education, Corporate and Governance. Einstein said without values there is no solution to humanity. Life is vacuum without values. Education cannot be only the sets of information but it should bring out the intellect with moral character.

Retreat at Munnar (Kerala)

Samani Charitra Pragya, vice chancellor of JVBI was invited to lead a workshop on Preksha Meditation at Munnar in Kerala. At the request of organising committee, Samani Charitra Pragya accompanied by Samani Rohit Pragya were offered for three days presence in the workshop. During the period of 05-07 October, they talked on Importance of Preksha Meditation, Prerequisite of Preksha Meditation, Power of Mantra, Contemplation, Mudra etc. and conducted the practical sessions of Relaxation, Deep Breathing, Pranayam Asana, Mantra Chanting and Contemplation. Impressive presentations, clear and distinct explanation of the queries of participants given by Samani Charitra Pragyaji encouraged all 130 participants to go deep into meditation and realise the truth.

Paryushan Parva

With the blessings of Acharya Shri, Vice Chancellor, JVBI, Samani Charitra Prajna and Samani Aagam Prajna went to Bangkok and Singapore for celebrating Paryushan Parva from 12-26 August. Many subjects like importance of Paryushan Parva, Penance, Karma, Self-effort, Destiny, Forgiveness, significance of Samvatsari, Stress Management, etc. were dealt in a very logical and effective manner by Samani Charitra Prajna. Every morning Samani Aagam Prajna presented the Life of Lord Mahavira and Codes of Conduct of Householder in a very simple, pragmatic and an attractive way. During the visit some meetings and lectures were also organized in some of the well-renowned universities such as Mahidol, Chulalongkorn, etc. situated in Bangkok. On 23rd went to Singapore for 3 days. Besides lectures Samaniji visited SMS University, a popular university of management. With the blessings of Acharyashri the whole journey was successful and fruitful.

Meet with Registrar and Vice Chancellor of Educational Institutes

Samani Charitra Pragya was invited to Bharatiya Vidya Bhavan, higher secondary school at Coimbatore. She had a meeting with K.V.Sonpal, registrar of the school on 04th Oct, 2012. He had explained the activities of school and expressed his desire to work together in the field of science of living. After having a short talk amongst students of department of Psychology, Vice chancellor Samani Charitra Pragya met with Dr, Sheela Ramchandran, Vice chancellor of Avinashilingam University and introduced the activities run by Social department of JVBI and proposed for students exchange programme. Dr, Ramchandran, agreed upon it and promised to plan something very soon so that students of both the universities can be benefitted. Samani Charitra Pragya also visited Bhartiyar University of Coimbatore. She had a meeting with Dr, G. James Pitchal, Vice chancellor of university. She shared her wish to work in collaboration on some specific projects. Dr, Pitchal agreed with and paid gratitude towards samaniji for showing interest to work with them.

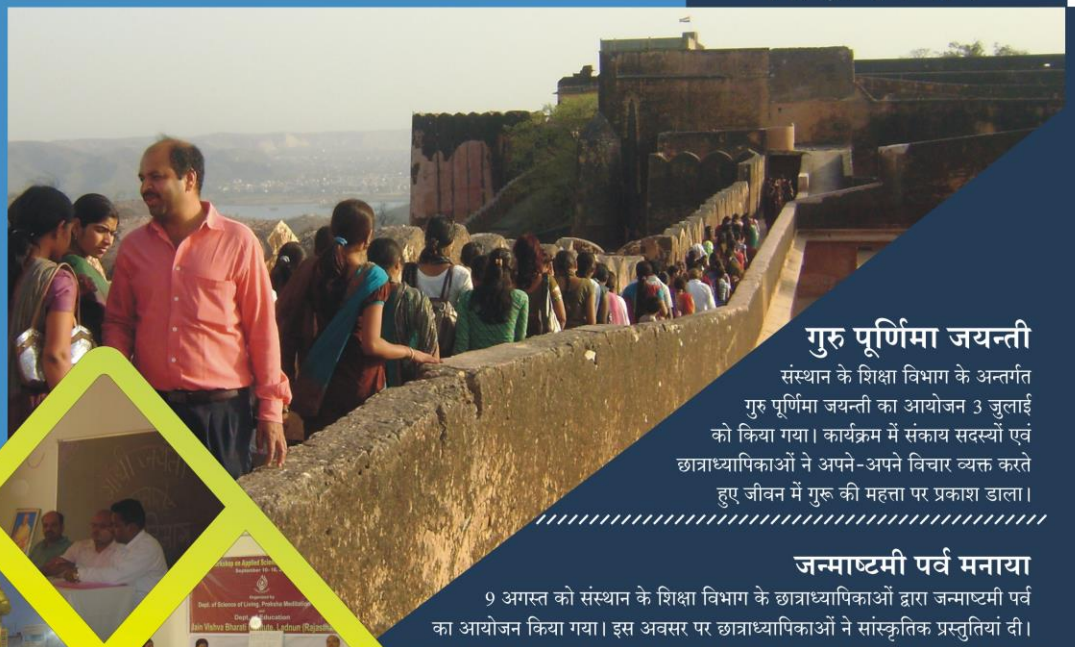

गुरु पूर्णिमा जयन्ती

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत गुरु पूर्णिमा जयन्ती का आयोजन 3 जुलाई को किया गया। कार्यक्रम में संकाय सदस्यों एवं छात्राध्यापिकाओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए जीवन में गुरू की महत्ता पर प्रकाश डाला।

जन्माष्टमी पर्व मनाया

9 अगस्त को संस्थान के शिक्षा विभाग के छात्राध्यापिकाओं द्वारा जन्माष्टमी पर्व का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्राध्यापिकाओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी।

गणेश चतुर्थी महोत्सव

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 19 सितम्बर को छात्राध्यापिकाओं ने गणेश चतुर्थी महोत्सव का आयोजन किया। इस अवसर पर छात्राध्यापिकाओं एवं संकाय सदस्यों ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति की। छात्राध्यापिकाओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी।

जीवन विज्ञान प्रतियोगिताएँ

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग संबंधी विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आसन, आशु भाषण एवं 'क्या वर्तमान शिक्षा मूल्यपरक है?' विषयक (वाद-विवाद) प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। आसन प्रतियोगिता में सुमन रिणवां, सुमन सैनी, वर्षा भदौरिया व रामकन्या (संयुक्त) तथा आशु भाषण में नानी बरेला, विनिता जैन एवं वर्षा भदौरिया एवं वाद-विवाद में नानी बरेला, विनिता जैन (संयुक्त) धनवंती डारा एवं ममता शर्मा क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे।

सांस्कृतिक व साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन 9 से 11 जुलाई तक किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. जे.पी.एन.मिश्रा ने प्रतियोगिताओं के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मनुष्य का विवेक, बुद्धि एवं भाव ही उसे अन्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठ बनाते हैं और संस्कार निर्माण की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करते हुए उसकी सृजनात्मकता का चरम विकास करती है। इस त्रिदिवसीय सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं में बी.एड. एवं एम.एड. की छात्राध्यापिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया एवं अपनी विविध बहुरंगी प्रतिभाओं का कुशल प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में गीत, मेहंदी, पूजा की थाली सजावट, नृत्य, आशुभाषण, बुके, रंगोली, आशुकविता, कहानी कथन, डम्ब शेराड, भजन, विचित्र वेशभूषा, नाटक, पोस्टर पेन्टिंग प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। निर्णायक के रूप में प्रो. दामोदर शास्त्री, डॉ. रेखा तिवाड़ी, डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, राकेश जैन, डॉ. अमित सिंह राठौड़, नेपाल चन्द गंग, डॉ. पुष्पा मिश्रा, डॉ. तृप्ति जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, रेखा शर्मा, अदिति गौतम, गिरधारीलाल शर्मा, प्रगति भटनागर, मधु जैन उपस्थित रहे। विभागाध्यक्ष डॉ. बी.एल. जैन ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

शिक्षक दिवस

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत छात्राध्यापिकाओं द्वारा शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में डॉ. बी.एल. जैन ने कहा कि शिक्षक ही ज्ञान, शील, अनुशासन, मूल्य, संस्कार एवं आचरण से समाज को आगे बढ़ाता है तथा मनुष्य को प्रज्ञावान, प्रकाशवान एवं समाजोपयोगी बनाता है। शिक्षा संकाय के प्राध्यापकों डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, बी. प्रधान, डॉ. सरोज राय, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभासिह, अदिति गौतम तथा गिरधारी शर्मा ने भी शिक्षक दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर छात्राध्यापिकाओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय

जीवन विज्ञान कार्यशाला में सहभागिता

19 सितम्बर को अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित प्रेक्षाध्यान कार्यशाला एवं निबन्ध प्रतियोगिता में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की दस छात्राओं ने भाग लिया। जीवन विज्ञान अकादमी, लाडनूं द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में आचार्य महाश्रमण ने जीवन विज्ञान की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जन समुदाय को संबोधित किया। कार्यशाला में जोधपुर, अजमेर, राणासर, श्रीगंगानगर, सूरतगढ़, लाडनूं, आसीन्द, पाली आदि से 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

निबन्ध प्रतियोगिता के परिणाम स्वरूप आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की तृतीय वर्ष की छात्रा प्रियंका शर्मा प्रथम एवं सुगन सारण तृतीय रहीं। पुरस्कृत प्रतियोगियों को ट्रॉफी एवं साहित्य से सम्मानित किया गया।

भजन समूह गान प्रतियोगिता

कॅरियर कॉउन्सलिंग सेल एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के अन्तर्गत 29 सितम्बर को सन्त भजन समूह गान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में महाविद्यालय के कुल छः समूहों ने भाग लिया। इस अवसर पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. समणी मल्लीप्रज्ञा ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएं होती रहनी चाहिये ताकि विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति हो सके। कार्यक्रम में डॉ. ममता खाण्डल, डॉ. अंशु लीला, डॉ. तृप्ति जैन, निर्मला भास्कर, विनित गोधल, विशाल यादव आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रगति भटनागर ने किया। कॅरियर कॉउन्सलिंग सेल के समन्वयक डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने धन्यवाद दिया। निर्णायक के रूप में महालक्ष्मी भटनागर एवं समणी रमणी प्रज्ञा उपस्थित रही।

महाविद्यालय में अभिभावक सम्मेलन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा अभिभावक सम्मेलन का आयोजन महाप्रज्ञ सभागार में किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. समणी मल्लीप्रज्ञा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि शिक्षक-अभिभावक मिलकर ही विद्यार्थी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अभिभावक प्रतिनिधि आलोक अग्रवाल ने महाविद्यालय के पाठ्यक्रमों की प्रशंसा करते हुए अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। अभिभावक शांतिलाल जैन, छात्रा मिलन जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

प्रवेश परामर्श एवं सम्पर्क अभियान

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा निकटवर्ती जसवंतगढ़, कुसुम्बी, लेडी व डाबड़ी में जैन विश्वभारती संस्थान के नियमित व पत्राचार पाठ्यक्रम का प्रवेश परामर्श व सम्पर्क अभियान का आयोजन किया गया। प्राचार्या डॉ. समणी मल्लीप्रज्ञा के निर्देशन में ग्रामीणों व छात्र-छात्राओं को जैन विश्वभारती संस्थान के नियमित व पत्राचार पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया की जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम में राजकीय बालिका विद्यालय जसवंतगढ़, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुसुम्बी का विशेष सहयोग रहा।

ए.के.के.एम. एवं कॅरियर काउन्सलिंग

कॅरियर काउन्सलिंग सेल एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 5 सितम्बर को उत्कल विश्वविद्यालय उड़ीसा के प्रो. शंकर लाल पुरोहित ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जब भारत स्वाधीन हुआ तथा प्रशासनिक आदि कार्यों में भारतीय भाषाओं के प्रयोग की बात सोची जाने लगी तब आरम्भ में अनुवाद का सहारा लिया जाना अस्वाभाविक नहीं था। इससे पूर्व प्रशासनिक कार्य में अधिकांशतः अंग्रेजी का प्रयोग हो रहा था। अतः भाषा परिवर्तन के लिए संक्रमण काल में अनुवाद की भूमिका स्पष्ट थी। अनुवाद का महत्त्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं कॅरियर काउन्सलिंग सेल के संयुक्त तत्त्वावधान में 8 सितम्बर को एस.एस. जैन सुबोध स्नातकोत्तर महाविद्यालय की डॉ. शैफाली जैन ने सेमीनार हॉल में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन में यदि उचित समय का ध्यान रखा जाये और शिक्षा के सोपान को प्राप्त करते रहे तो जीवन में निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है।

12 सितम्बर को राजस्थान उच्च शिक्षा निदेशालय के पूर्व कमिश्नर प्रो. नवलकिशोर भाभड़ा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि एक विद्यार्थी के जीवन में परीक्षा से पहले व परीक्षा के बाद का समय बहुत अहमियत रखता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार करें तो यह समय हमारे शरीर व मन को बहुत प्रभावित करता है। इसी कारण परीक्षा के समय विद्यार्थी को सदैव आत्म विश्वास रखना चाहिये।

कॅरियर कॉउन्सलिंग सेल एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 14 सितम्बर को रतनगढ़ राजकीय महाविद्यालय के व्याख्याता डॉ. वीरेन्द्र वर्मा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आत्मविश्वास एक ऐसा शब्द है जिसे नींव का पत्थर माना जा सकता है। आत्मविश्वास शब्द की सार्थकता वाणी से उसे अभिव्यक्ति देने मात्र से नहीं है, अपितु यह हृदय में उठने वाला एक ऐसा उच्च तथा श्रेष्ठ कोटि का भाव है जिससे संसार की हर दुर्लभ वस्तु को सुगमता से पाया जा सकता है।

कॅरियर काउन्सलिंग सेल एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 28 सितम्बर को वाणिज्य संकाय बीकानेर के प्रोफेसर गौरव बिस्सा ने विद्यार्थियों को कॅरियर की जानकारी देते हुए कहा कि जीवन का प्रथम सोपान है - व्यक्तित्व का विकास। उन्होंने कहा कि यदि हम सकारात्मक चिन्तन करेंगे तो स्वयं का भावी जीवन तो सुरक्षित होगा ही साथ में समाज एवं राष्ट्र का भी कल्याण होगा।

29 सितम्बर को आयोजित व्याख्यान के अन्तर्गत छात्राओं को संबोधित करते हुए पूर्व जिला शिक्षाधिकारी गुलाबचन्द शर्मा कुचामनसिटी ने कहा कि व्यक्तित्व विकास जीवन का महत्त्वपूर्ण सोपान होता है। विद्यार्थी शिक्षा प्राप्ति के साथ-साथ अपने जीवन में मूल्यों का विकास भी करें।

महाविद्यालय में नवागन्तुक छात्राओं का स्वागत

21 जुलाई को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा तेरापंथ भवन में नवागन्तुक छात्राओं के स्वागत में आयोजित कार्यक्रम में छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर समारोह को संबोधित करते हुए संस्थान की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा ने छात्राओं को संबाधित करते हुये कहा कि विद्यार्थी जीवन में प्राप्त सद्गुण जीवन भर महकते रहते हैं। विद्यार्थी शिक्षा प्राप्ति के साथ-साथ अपने जीवन में मूल्यों का विकास भी करें। प्राचार्या डॉ. समणी मल्लीप्रज्ञा ने कहा कि जीवन में प्रामाणिकता, सहनशीलता, सामन्जस्य व सेवा भावना का विकास करने का लक्ष्य प्रत्येक विद्यार्थी का होना चाहिए। विद्यार्थियों को तत्कालीन कुल सचिव प्रो. जे.पी.एन. मिश्रा ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर नवागन्तुक छात्राओं को मिस फ्रेशर व मिस इन्ट्रोड्युसर का खिताब क्रमशः ताम्बी दाधीच व नीलम टाक को दिया गया।

जैन विश्वभारती संस्थान के दूरस्थ शिक्षा की भूरि-भूरि प्रशंसा

दूरस्थ शिक्षा परिषद, यू.जी.सी. एवं भारतीय तकनीकी परिषद नयी दिल्ली की संयुक्त समिति ने जैन विश्वभारती संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय का दौरा कर दूरस्थ शिक्षा के पाठ्यक्रमों तथा इसके स्वतः बोध पाठ्यसामग्री की गुणवत्ता की जाँच की। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के संकाय सदस्यों से संवाद किया, विद्यार्थी सेवा केन्द्र का अवलोकन किया, ऑडियो-वीडियो सी.डी. का निरीक्षण किया। क्लासरूम, कम्प्यूटर लैब, लैंग्वेज लैब, योगा लैब, लाइब्रेरी आदि का अवलोकन कर सभी सदस्यों ने मंत्रमुग्ध होकर जैन विश्वभारती संस्थान के दूरस्थ शिक्षा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। संयुक्त समिति के अध्यक्ष दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के वरिष्ठ प्रो. टी.के.वी. सुब्रह्मण्यम थे। समिति में यू.जी.सी. के मनोनीत सदस्य प्रो. के.के. पण्डा और अखिल भारतीय तकनीकी परिषद के मनोनीत सदस्य प्रो. अल्ताफ खान थे। इग्नू की वरिष्ठ सदस्य प्रो.सुनयना कुमार एक मात्र महिला सदस्य थी तथा दूरस्थ शिक्षा परिषद नयी दिल्ली के डॉ. देवकान्त राय समिति के समन्वयक सदस्य थे। जैन विश्वभारती संस्थान के दूरस्थ शिक्षा के पाठ्यक्रमों की स्थायी मान्यता के सन्दर्भ में पाँच सदस्यीय टीम का 10 जुलाई को आगमन हुआ। कुलपति महोदया ने पहले अपने कक्ष में सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए संस्थान के वैशिष्ट्य से सदस्यों को अवगत कराया। बाद में कुलपति कान्फ्रेन्स कक्ष में कुलपति महोदया ने स्वागत वक्तव्य दिया। संस्थान के सभी विभागाध्यक्षों एवं निदेशालय के सभी संकाय सदस्यों के बीच निदेशक डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने निदेशालय की वर्तमान गतिविधियों पर प्रकाश डाला। समिति के अध्यक्ष प्रो.सुब्रह्मण्यम नेअपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य तुलसी एक राष्ट्रीय संत थे। उनकी प्रेरणा से स्थापित इस विश्वविद्यालय की सभी प्रवृत्तियों को समझने के बाद यह कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है कि यह अपने आप में अद्वितीय है और प्राच्य विद्या, जैन विद्या तथा आधुनिक विद्याओं के अध्ययन, अध्यापन एवं शोध की दिशा में यहां बहुत अच्छा काम हो रहा है। प्रो. पण्डा ने कहा कि इस विश्वविद्यालय की स्थापना से मेरा जुड़ाव रहा है। उस समय मुझे शंका थी किन्तु अब इस विश्वविद्यालय को नजदीक से देखकर मैं कह सकता हूं कि यहां बहुत अच्छा काम हो रहा है। अन्य सदस्यों ने भी विश्व-विद्यालय के गतिविधियों एवं संकाय सदस्यों की तारीफ की तथा मानदसेवा देने वाली समणियों को इस विश्वविद्यालय की विशिष्ट पूंजी बतलाया।

मानवीय मूल्यों के बिना ज्ञान खतरनाक–प्रो. बी.एम. शर्मा

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं कॅरियर काउन्सलिंग सेल के तत्त्वावधान में यूथ फेयर का आयोजन 25 अगस्त को किया गया। सुधर्मा सभा में आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष प्रो. बी.एम. शर्मा ने कहा कि वर्तमान में ज्ञान के साथ नैतिक मूल्यों का समावेश जरूरी है। प्रो. शर्मा ने जैन विश्वभारती संस्थान को नैतिक मूल्यों से प्रेरित एक मात्र संस्थान बताते हुए कहा कि यहां का परिवेश प्रभावित करता है।

समारोह को सान्निध्य प्रदान करते हुए शासन गौरव मुनिश्री धनन्जय कुमारजी ने कहा कि शिक्षा के साथ आध्यात्मिक प्रयोग से नये चिंतन व नये व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है। अध्यक्षता करते हुए संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि जीवन में अच्छाई का विकास बहुत जरूरी है।

समारोह के विशिष्ट अतिथि प्रो. बी.एल. फड़िया ने कहा कि युवाओं को सजग रहकर अपने लक्ष्य के अनुरूप कॅरियर का निर्माण करना चाहिए।

संस्थान के कुलसचिव परमेश्वर शर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि मानवीय मूल्यों के साथ शिक्षा देना इस संस्थान का उद्देश्य है।

कार्यक्रम में जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन की विभागाध्यक्ष डॉ. समणी ऋजुप्रज्ञा, प्राचार्य डॉ. समणी मल्ली प्रज्ञा, डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. जुगल दाधीच ने भी अपने विचार व्यक्त किये। फेयर में विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न स्टॉल लगाए गए।

यूथ फैयर में खेल, ज्वैलरी, घड़ी, कपड़े, ज्यूस, चाइनिज भेल, पकोड़े, पनीर, चीलड़े, आइसक्रीम आदि के 26 स्टॉल लगाए गए। इससे छात्राओं का आत्मविश्वास बढ़ा एवं क्रय-विक्रय की प्रक्रिया एवं हिसाब-किताब करने की विधि का ज्ञान हुआ है। खाने के सभी स्टॉलों के बीच प्रतियोगिता रखी गई थी।

निर्णायक में डॉ. संजीव गुप्ता, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ एवं पुष्पा मिश्रा थे।

Career Counseling Cell

राजस्थान विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय के प्रो. डी. आर. जाट ने 9 जुलाई को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि भूमण्डलीकरण, उदारीकरण एवं निजिकरण वह प्रक्रिया है जिसमें किसी देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था से जोड़ा जा सकता है।

कॅरियर काउन्सलिंग सेल के तत्त्वावधान में 6 अगस्त को मेवाड़ विश्वविद्यालय के विधि संकाय के प्रो. आर. एन. शर्मा ने संस्थान के छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि मानवाधिकारों की अवधारणा इतिहास की दीर्घ अवधि से विकसित हुई है। आज मानव अधिकार व्यक्तित्व के विकास, शोषण रहित समाज के निर्माण, आर्थिक समृद्धि और विश्वशांति के लिये आवश्यक है।

25 अगस्त को जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर के इतिहास के प्रोफेसर जी.एन. माथुर ने आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं को इतिहास विषय का महत्त्व बताते हुए इसे एक जीवन्त विषय बताया तथा विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में इतिहास विषय के चुनाव का सुझाव दिया।

20 सितम्बर को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं को संबोधित करते हुए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के डॉ. गोरधन धाकड़ ने कहा कि आज का युग प्रतियोगिता का युग है। प्रतियोगिता के आधार पर ही कॅरियर की सफलता निर्भर करती है। सकारात्मक सोच से प्रतियोगिता रखी जायेगी तो कॅरियर निर्माण में सुगमता होगी।

जैन विश्वभारती संस्थान के छात्र-छात्राओं को 25 सितम्बर को राजेन्द्र मिश्रा अतिरिक्त जिला कलेक्टर, बीकानेर ने संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा समुदाय या व्यक्तियों द्वारा परिचालित वह सामाजिक प्रक्रिया है, जो समाज को उसके द्वारा स्वीकृत मूल्यों और मान्यताओं की ओर अग्रसर करती है।

आचार्य महाप्रज्ञ सभागार में 27 सितम्बर को संस्कृत एवं प्राकृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुये कहा कि मूल्यों की प्रतिष्ठा, मूल्यों का सम्प्रेषण और मूल्यों के संरक्षण का त्रिवेणी समायोजन ही पूर्ण शिक्षा है। शिक्षा का उद्देश्य सुयोग्य व्यक्तित्व का निर्माण करना है

29 सितम्बर को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में छात्राओं को इतिहास विषय के बारे में बताते हुए डॉ. विनीत गोधल ने कहा कि इतिहास का अध्ययन केवल इसलिये जरूरी नहीं है कि इससे हमें अतीत की जानकारी मिलती है जो हमें वर्तमान को समझने एवं भविष्य को बेहतर बनाने में सहयोग देती है अपितु इतिहास के समुचित अध्ययन से देश काल की विशिष्टता रेखांकित होती है।

सफलता का राजमार्ग – विद्या, विनय, विवेक

Talk at Avinashilingam University of Coimbatore

On 4th October Samani Charitra Pragya, Vice chancellor of Jain Vishva Bharati University visited Avinashilingam, Women University of Coimbatore. Prof. Ragini, the head of the department of Psychology received Samaniji and introduced the academic activities run by the department. She requested samaniji to have an interaction with the students of psychology department. Samani Charitra Pragya talked on the modern problem world facing today called stress. She inspired students to practise meditation, relaxation, contemplation in their daily life and also suggested them to advise these exercises to the people who are suffering from mental and psychosomatic diseases.

'महाकवि कुवेंपु राष्ट्रीय संगोष्ठी' में उद्बोधन

झीलों की नगरी उदयपुर में स्थित मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रकवि कुवेंपु प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में समायोजित 'महाकवि कुवेंपु राष्ट्रीय संगोष्ठी' में समणी चारित्रप्रज्ञा कुलपति जैन विश्वभारती संस्थान को विशिष्ट उद्बोधन हेतु आमंत्रित किया गया। इस समारोह में अपने-अपने क्षेत्र के ख्यात विद्वान उपस्थित थे। जैसे - डॉ. प्रधान गुरुदत्त, श्री मनुदेवजी, हम्पी विश्वविद्यालय, कर्नाटक के कुलपति प्रो. एच. सी. बोरलिंगय्या आदि। समणी चारित्रप्रज्ञा ने राष्ट्रकवि कुवेंपु के जीवन संबंधित कुछ अनछुए पहलुओं को उजागर करते हुए कहा कि साहित्य रचना एक महान कला है, जिसमें भावना की एक अहम् भूमिका है। भावना के अभाव में वह रचना मात्र एक ढांचा बनकर रह जाती है। समारोह के समायोजन कर्त्ता थे महाकवि कुवेंपु के शिष्य प्रो. हम्पा राजायूया।

Gyansala Teachers Training Camp

The *gyanashala* teachers at Delhi were addressed on the occasion of their camp by Samani Satya Pragya and Rohini Pragya. It was all thought about bringing innovative skills to create interest among children.

Shravak Sammelan at Chennai

On 2nd October Samani Charitra Pragya, Vice chancellor of Jain vishva Bharati Institute was invited to Tamilnadu Shravak Sammelan organised at Chennai. In her talk, she appreciated projects under taken by shravak samaj on the occasion of 100th birth anniversary of H.H. Acharya Shri Tulsi. She motivated people to pay their duties and responsibilities towards Jain dharma, Terapantha dharma sangh and Jain Vishva Bharati Institute. Shravak Samaj paid gratitude towards samaniji for providing her auspicious presence in the programme and encouraging them to play an active role to spread Jain principles throughout the world.

Endowment Lecture at University of Madras

On 3rd October Samani Charitra Pragya, Vice chancellor of Jain vishva Bharati Institute was invited to deliver a lecture under the series of Acharya shri Tulsi Memorial Endowment Lecture, organised by University of Madras. The event took place in the department of Jainology. Samaniji spoke on "Science of Living: A way to balanced and meaningful life". During her talk she focused on Education awareness, modern system of education, outcome of current education, need of value based education, emotional intelligence, significance of Science of Living introduced by His Holiness Acharya Mahapragyaji etc. At the end of the lecture, in the question answer session many students asked the questions and received satisfactory answers from samaniji. Samani Charitra Pragya appreciated students desire to have intensive knowledge of Jainism. She inspired them to contribute in spreading Jain principles by undertaking some research projects. Prof. Priyadarshani, head of the Jainilogy department paid gratitude towards samaniji for enlightening the students and faculties of department.

FUREC Meeting

FUREC-Meeting with H.E. Ex-President A.P.J. Abdul Kalam and other religious leaders. Dr Samani Satya Pragya and Samani Rohini Pragya attended meeting of FUREC at Delhi in Anuvrata Bhawan.

The discussion focused basically on evolving a TOLERANT SOCIETY and the equation formulated by Respected APJ KALAM of HAPPY HOME. It was a open discussion with all the members present there. The whole idea was centered on this forumula :

HAPPY HOME = SPIRITUAL HOME + HAPPY MOTHER + TRANSPARENT FATHER AND GREEN OR CLEAN ROOM. Moreover, ACHARYA MAHAPRAGYA LECTURE SERIES was also thought about .

CA Parmeshwar Sharma has joined as New Registrar

Born in 1954 at Ladnun in Rajasthan and completed his primary education in Ladnun only. He passed his Higher Secondary examination in 1970 with first division and left the native place for higher education. He did graduation in commerce stream from the University of Jodhpur in Rajasthan and then went to Calcutta for doing his professional course of Chartered Accountancy. After completed his CA course, joined a Birla group company Saurashtra Chemicals at Porbandar in Gujarat and later on in the year 1984 attached with Laxmi Mittal group at Calcutta. He worked in their different plants i.e. Nippon Denro Ispat Ltd., Nagpur, Ispat Profiles India Ltd., Pune and lastly in Ispat Industries Ltd., Mumbai till 2003. He worked almost in senior positions in their plants and got a good industrial exposure in Accounts, Finance, Audit, Cost Budgeting and MIS, Excise, Income Tax, Sales Tax and Insurance matters. Apart from these, he has good experience of office administration. He participated in their top management meetings for decision making and attended various training programs and seminars. He has enriched experience through travelling across the country for the purposes of company's work. Later on, he joined again a steel company named Uttam Galva Steels Ltd at Mumbai Head Office as Vice President (Commercial) for their upcoming projects in the state of Maharashtra. Due to personal reasons he left the company and joined with us as a Registrar from 01.08.2012.

ANUVRATA SONGS SINGING COMPETITION

Samani Satya Pragya and Samani Rohini Pragya addressed children participating in *anuvrata* song singing competition organized by *Akhil Bhartiya Anuvrata Nyas* at Delhi. Amazing presentations were seen in small school going kids.

NATIONAL POEM CONFERENCE

Dr Samani Satya Pragya and Samani Rohini Pragya participated in national poem conference. Great poets all across the country were present in this conference. The presentations of poems were simply amazing. Samani Satya Pragya too presented her Poems.

डॉ. समणी चैतन्यप्रज्ञा का कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ में व्याख्यान

देवी अहिल्या, विश्वविद्यालय इन्दौर द्वारा मान्य शोध केन्द्र, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इंदौर एक सम्पूर्ण शोध संस्थान है। फ्लोरिडा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय मियामी (अमेरिका) से कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ का सतत् सम्पर्क है। हम ज्ञानपीठ से मिलकर शोध और अनुसंधान के क्षेत्र में अनेक परियोजनाएं संचालित करना चाहते हैं। उक्त विचार फ्लोरिडा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय मियामी (अमेरिका) की विजिटिंग प्रोफेसर एवं जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं की सह-आचार्या डॉ. समणी चैतन्यप्रज्ञा ने कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ द्वारा आयोजित आठवें क्षुल्लक जिनेन्द्रवर्णी व्याख्यानमाला के अंतर्गत कही। फ्लोरिडा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में जैन विद्या के अध्ययन विषय पर बोलते हुए समणीजी ने बताया कि आगामी सत्र में हम कुछ आनलाईन कोर्सेज भी शुरु कर रहे हैं जिसमें भारत सहित विश्व के किसी भी क्षेत्र से विद्यार्थी सम्मिलित हो सकेंगे।

Samanijis' Participation in National Seminar at Subodh College, Jaipur

Samani Sangeet Pragya and Samani Rohit Pragya have participated in the seminar "Jain Dharma: Naveen Shodh, Sambhavanaen aur Vartaman ParipREkshya mein Yogadan" organised by Jain Subodh College on 19-20 October 2012 at Jaipur. Samani Sangeet Pragya presented a paper entitled "Bhagavan Arishtanemi ka jeevan Darshan: Ek Aetihasik Adhyayan and Samani Rohit Pragya spoke on "Anekantvad: Peace building in Disconsolate World". Samanijis had meeting with K.B. Sharma, principle of the college. He expressed gratitude towards samaniji for taking part in the national conference. Conference was attended by many eminent scholars, professors and research scholars of Jainism came from various parts of India.

Participation in a Symposium "Health & Happiness"

Samani Rohit Pragya and Samani Mimansa Pragya participated in a symposium "Health & Happiness", jointly organized by Heart Care Foundation of India and Bharatiya Vidya Bhavan at the Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi on July 5, 2012. The symposium brought together nine religions under one roof. Dr Karan Singh, MP (Rajya Sabha), eminent author, thinker, educationist was the Chief Guest of the event. A panel discussion followed the keynote address. During the Panel, representative of all religions –Hinduism, Christianity, Islam, Sikkhism, Bahai faith, Buddhism, Jainism etc. presented their views on health and happiness as per their tradition. Sharing views from Jain perspective regarding the concept, Samani Rohit Pragya said that a person who has passions (anger, ego, greed, deceit) within him cannot be healthy. If a person is healthy emotionally, he will be healthy at physical and mental level too. To have restraint and purity in life, one needs to be aware of each and every moment. So in other words it can be said that awareness is a way to experience good health and happiness in life The discussion was moderated by Padma Shri Awardee, Dr. K.K. Aggarwal, President of Heart Care Foundation of India.

List of Donors

(01-04-2011 to 31-12-2012)

S.No.	Name of Donor
01.	Sh. Pyarelal Pitaliya, Chennai
02.	Sh. Dharamchand Lunkar, Chennai
03.	Sh. Sukanraj Parmar, Chennai
04.	Smt. R. Maina Parmar, Chennai
05.	Smt. D. Varsha Parmar, Chennai
06.	Sh. Tejraj Punamia, Chennai
07.	Sh.Goutham Chand Amul Bohra, Chennai
08.	Sh. M. Kishore, Chennai
09.	Dr. Mohan Lal, Chennai
10.	Smt. R. Pushpa, Chennai
11.	Smt. Pushpa Mohan Lal, Chennai
12.	Sh. Ashok Bhutodia, Guwahati
13.	Veer Seva Mandir, New Delhi
14.	Eastern Finance Ltd. Kolkata
15.	Mamta Machinery & Electricals, Bardoli
16.	Bee Tex Pvt Ltd, Kolkata
17.	Sh. Tarachand Singhi, Assam
18.	Sh. Vijaychand Sukhani, Faridabad
19.	Sh. Ashok Chetan Kumar, Chennai
20.	Super Tube Corporation, Chennai
21.	Sh. Jughraj Ganpatraj, Chennai
22.	Sh. Surendra Vilash Kumar, Chennai
23.	Sh. Rikhabh Chand Manoj , Chennai
24.	Sh. Ugamraj Vimal Sand, Chennai
25.	Steel Tube Co (South), Chennai
26.	Sh. Tansukhlal Dilip Nahar, Chennai
27.	Sh. Amar Bohra, Chennai
28.	Sh. Mahendra Mehul Kumar Vad, Chennai
29.	J. K. Jewellers, Chennai
30.	Sh. Ramesh Dinesh Jirawala, Chennai
31.	Sh. Ashok Yasdeep Sethia, Chennai
32.	Amar Communication, Chennai
33.	Smt. Sunder Laxmi Devi, Kolkata
34.	Sh. Harkchand Kantilal, Barmer
35.	Sh. Gautham Bafna, Chennai
36.	Sh. U. Ashok Kumar, Chennai
37.	Sh. Mahendra Bafna, Chennai
38.	Sh. Mahaveer Bafna, Chennai
39.	Sh. K. Balaji, Chennai
40.	Sh. Harak Chand, Bangalore
41.	Sh. Anand Bagrecha, Pune
42.	Sh. Navratan Purohit, Sujangarh
43.	Sh. Mangi Lal, Balotra
44.	Sh. Prakash Kothari, Rajnandgoan
45.	Smt. Raikanwari Banthia, Mumbai
46.	Sh. Ranmal Daulatraj Bhandari, Ahemdabad
47.	Jain Swetamber Terapanthi Mahasabha, Kolkata
48.	BPL Handloom Sarees, Jasol
49.	Jai Shree Enterprises
50.	Mahaveer Pharma, Chennai
51.	Sh. Ramesh Kumar, Balar

S.No.	Name of Donor
52.	Smt. Sabati Pukhraj Dhelariya, Gandhi Dham
53.	Smt. Kanta Pukhraj Dhelariya, Gandhi Dham
54.	Smt. Santosh Shanti Lal Dhelariya, Gandhi Dham
55.	Smt. Maina Ashok Dhelariya, Gandhi Dham
56.	Sh. Devraj Jetmal HUF, Gandhi Dham
57.	Smt. Anu Devraj Dhelariya, Gandhi Dham
58.	Smt. Sangeeta Prakash Dhelariya, Gandhi Dham
59.	Smt. Kavita Kamlesh Dhelariya, Gandhi Dham
60.	J. B. Boda Reinsurance Brokers Pvt. Ltd., Mumbai
61.	Lord Real Estate, Kolkata
62.	Sh. Vimal & Charul Shah, USA
63.	Sipani JM, Indonesia
64.	Sh. Bhanwarlal Vinod Lunkar, Chennai
65.	Akhil Bhartiya Terapanth Mahila Mandal, JVB, Ladnun
66.	Sh. Anil Jain, Banglore
67.	Smt. Priya Jain, Banglore
68.	Smt. Laxmi Khater, Banglore
69.	Smt. Shanti Jain, Banglore
70.	Sh. Dilip Sethia, Vishakhapatnam
71.	Sh. Vinod Heerawat, Vishakhapatnam
72.	Sh. Chandan Mal, Gulab Sethia, Vishakhapatnam
73.	Smt. Sajan Sethia, Vishakhapatnam
74.	Smt. Kiran Surana, Vishakhapatnam
75.	Sh. Arun Surana, Vishakhapatnam
76.	Sh. Ummed Mal Tarun Surana, Vishakhapatnam
77.	Sh. Laxmipat Bhutoria, Vishakhapatnam
78.	Smt. Ramkanwari Baid, Vijaynagaram
79.	Smt. Kamala Golechha, Vishakhapatnam
80.	Sh. Shanti Lal Bhatera, Chadavas
81.	Deep Charitable Institution, New Delhi
82.	Sh. Prakash Kothari, Raipur
83.	Sh. Jevanth Raj, Kundanmal Parmar, Chennai
84.	Sh. Suraj Dhoka, Chennai
85.	Smt. Bhiki Devi Bothra, Gangtok
86.	Jain Vishva Bharati, Ladnun
87.	Sthanakwasi Jain Sangh, Bangkok, Thailand
88.	Sh. Mahendra Bafna, Mumbai
89.	Sh. Sanjay Khicha, Mumbai
90.	Sh. Amit Gandhi, Mumbai
91.	Sh. Deepak Jain, Mumbai
92.	Sh. Padam Jain, Mumbai
93.	Ganadhipati Tulsi Jain Engineering College, Vellore
94.	Sh. Naresh Oswal, Balotra
95.	Smt. Lalita Jain, Balotra
96.	Smt. Luni Devi Golchha, Balotra
97.	Smt. Bhavna Golchha, Balotra
98.	Sh. Manak Chand Gautam Singhvi, Balotra
99.	Sunder Devi, Laxmi Devi Parakh Trust, Kolkata
100.	Smt. Priyanka Sanjay Bhansali, Kolkata
101.	Sh. Ganapatraj Surana, Chennai

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत घोषित

मान्य विश्वविद्यालय

M.A. M.S.W. M.Phil. Ph.D.

B.A. B.Com. B.Ed. M.Ed.

Placement Assistance | Separate Hostels for Male & Female | Scholarship Facility | Internet Facility | Coaching for Competition Exams

विशेषताएँ

● राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा समाजोपयोगी कार्यक्रम ● व्यक्तित्व विकास शिविर द्वारा मूल्यपरक शिक्षण एवं प्रशिक्षण ● शैक्षिक भ्रमण ● राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिताओं में संभागिता ● महाविद्यालय परिसर में बुक बैंक व्यवस्था उपलब्ध ● अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण जैसे पाठ्यक्रमों में रियायती शुल्क पर प्रशिक्षण ● योग्य अनुभवी शिक्षक एवं प्रबुद्ध समणी वर्ग द्वारा विशेष अध्यापन ● आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु प्रयोगशाला लेबोरेटरी ● शान्त, सुरक्षित, अनुशासित एवं प्रदूषण मुक्त परिवेश ● सभी पाठ्यक्रम यू.जी.सी. एवं भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ● संभाषण, लेखन, खेलकूद, साहसिक एवं रोमांचक खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में विशेष अवसर ● समृद्ध एवं विशाल पुस्तकालय की व्यवस्था ● छात्रावास एवं जिम की सुविधा ● प्राच्य विद्याओं का अध्ययन करने वाले छात्रों को स्कॉलरशिप देने का प्रावधान ● प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रशिक्षण (NET, JRF, CPT and CS) ● विषयों से सम्बन्धित विशेष कोचिंग कक्षाएं।

नियमित पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

एम.ए.

● जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ● दर्शन ● संस्कृत ● प्राकृत ● जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग ● क्लीनिकल साइकोलॉजी ● अहिंसा एवं शान्ति ● राजनीति विज्ञान ● समाज कार्य ● अंग्रेजी ● एम.एड. (उपरोक्त सभी विषयों में पी-एच.डी. सुविधा)

एम.फिल.

● जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ● अहिंसा एवं शांति ● प्राकृत एवं जैन आगम

स्नातक पाठ्यक्रम

● बी.ए. ● बी.कॉम. ● बी.एड. (केवल महिलाओं के लिए)

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

● स्टडीज इन जैनिज्म ● नेचुरोपैथी ● प्रेक्षा योगा थैरेपी ● होम साइंस ● एन.जी.ओ. मैनेजमेण्ट ● बैंकिंग ● रूरल डेवलपमेण्ट ● जेण्डर इम्पॉवरमेण्ट ● कॉरपोरेट सोसियल रिस्पोन्सिबिलिटी ● ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेण्ट ● काउन्सलिंग एण्ड कम्युनिकेशन

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

● ग्राफिक्स डिजाइन ● प्राकृत ● जर्नलिज्म एण्ड मास मीडिया ● कम्प्यूनिकेशन इन इंग्लिश ● इन्स्ट्रक्शनल मैथड एण्ड मीडिया ● एजुकेशनल साइकोलॉजी ● योग एवं प्रेक्षाध्यान

पत्राचार पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

● जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ● शिक्षा ● हिन्दी ● जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग ● अंग्रेजी ● अहिंसा एवं शांति

स्नातक पाठ्यक्रम

● बी.ए. ● बी.कॉम. ● बी.लिब.

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

● अहिंसा प्रशिक्षण ● अण्डर स्टैंडिंग रिलिजन ● जैन धर्म एवं दर्शन ● ह्यूमन राइट्स ● जैन आर्ट एंड एस्थेटिक्स ● प्राकृत ● ज्योतिष विज्ञान

बी.पी.पी. पाठ्यक्रम

वे आवेदक जो 10+2 उत्तीर्ण नहीं हैं अथवा प्राथमिक औपचारिक योग्यता नहीं रखते हैं, लेकिन 18 वर्ष की उम्र पूर्ण कर चुके हों, विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित बी.पी.पी. परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं।

फोन : 01581-226110, 224332, 226230 फैक्स : 227472 web : www.jvbi.ac.in e-mail : jvbiladnun@gmail.com